संस्कृत प्रचार पुस्तक माला सं० ३७

संस्कृत-गौरव-गानम्

★

नगरे - नगरे ग्रामे - ग्रामे विलसतु संस्कृत - वाणी,
सदने - सदने जन - जन - वदने जयतु चिरं कल्याणी,
सत्य - शील - सौन्दर्य - सभीरा, ज्ञान-जला, गति-सारा,
छल-छल कल-कल प्रवहतु दिशि-दिशि पावन-संस्कृत-धारा ॥

★

सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्
सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
वाराणसी

संस्कृत प्रचार पुस्तक माला सं० ३७

संस्कृत-गौरव-गानम्

[संस्कृत भाषा एवं साहित्य के महत्त्व तथा उसके पठन-पाठन एवं प्रचार की उपयोगिता के सम्बन्ध में कतिपय हिन्दी की कवितायें एवं गीत]

★

रचयिता

श्री वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सम्पादक—संस्कृत प्रचारपुस्तक माला)

★

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वा रा ण सी

प्रकाशक—

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

डी० ३८/११०, हौजकटोरा, वाराणसी

द्वितीय संस्करण—एक हजार

मूल्य : दो रुपये

वसन्तपञ्चमी २०३४ वि०

१२ फरवरी, १९७८ ई०

★

मुद्रक—

बैजनाथ प्रसाद

कल्पना प्रेस

रामकटोरा रोड, वाराणसी

आवश्यक निवेदन

संस्कृत भाषा के व्यापक प्रचार की दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि पुस्तक-पुस्तिकाओं तथा पोस्टरों के प्रकाशन द्वारा सर्वसाधारण को संस्कृत की विस्मृतप्राय गरिमा तथा उसकी राष्ट्रीय उपयोगिता का समीचीन रूप से बोध कराया जाय तथा इसके द्वारा उसके हृदय में संस्कृत के पठन-पाठन एवं प्रचार के प्रति श्रद्धा एवं कर्तव्यनिष्ठा उत्पन्न की जाय। शान्तिनिकेतन में रहते समय एक बार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने भी कार्यालय को प्रदत्त सम्मति में इस विषय की विशेष रूप से चर्चा की थी और इसे संस्कृत-प्रचार की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य बतलाया था। तदनुसार कार्यालय द्वारा एक पुस्तक प्रकाशित की गई जिसमें संस्कृत भाषा एवं साहित्य के महत्त्व तथा उसके पठन-पाठन एवं प्रचार की आवश्यकता के सम्बन्ध में देश-विदेश के कतिपय सुविख्यात मनीषियों के विचार संकलित किये गये हैं। इसी प्रकार कार्यालय द्वारा दस बारह ऐसे पोस्टर भी प्रकाशित किये गये हैं जिनमें उपर्युक्तभाव-व्यञ्जक छोटे-बड़े अनेक प्रकार के वाक्यों का उल्लेख किया गया है। यह सामग्री भी संस्कृत प्रचार की दृष्टि से उपयोगी ही है और संस्कृतप्रेमी समाज ने इसका पर्याप्त स्वागत भी किया है। फिर भी इसके साथ ही बहुत दिनों से मैं यह भी सोचा करता था कि यदि हिन्दी की कविताओं एवं गीतों द्वारा संस्कृत की गरिमा एवं उसकी उपयोगिता का प्रचार किया जाय तो वह अधिक आकर्षक एवं प्रभावकारी हो सकता है। धीरे-धीरे इस विचार को कार्यान्वित होते देखने की मेरी इच्छा प्रबल होती गई और यह

सौभाग्य की बात है कि प्रस्तुत पुस्तक के रूप में आज वह इच्छा किसी रूप में पूर्ण भी हो गई।

यद्यपि संस्कृत के विषय में, उसकी गरिमा के अनुरूप ही, मुझे उच्च-कोटि की रचनाओं को ही प्रकाशित करने का विचार था और एतदर्थ मैंने अपने हिन्दी के कुछ सिद्धहस्त कवि-मित्रों से निवेदन भी किया था परन्तु जब उनकी ओर से बार-बार मधुर आश्वासन मिलने पर भी कविताओं के मिलने की आशा नहीं दीख पड़ी तो हिन्दी-कविता लिखने में सर्वथा अक्षम होने पर भी अपनी साध बुझाने के लिए कुछ रोष और ईर्ष्या के साथ मुझे ही इन टूटे-फूटे पदों को जोड़ने के लिये विवश होना पड़ा। यद्यपि मुझे इन कविताओं से स्वयं पूर्ण सन्तोष नहीं है और इन्हें प्रकाशित करने में भी संकोच का अनुभव करता हूँ तथापि मुझे आशा है कि संस्कृत की सभा-सम्मेलनों के अवसर पर इन रचनाओं का यदि सुमधुर स्वर में पाठ हो तथा इनकी कुछ पंक्तियाँ पोस्टर के रूप में भी प्रकाशित कर प्रचारित की जायँ तो संस्कृत शिक्षा की ओर सर्वसाधारण का ध्यान आकृष्ट करने में इन क्तियों से भी कुछ न कुछ सहायता मिल ही सकती है और इसी आशा से मैंने इसे प्रकाशित करना उचित समझा। मुझे विश्वास है कि संस्कृत के विद्वान्, विद्यार्थी, संस्कृत प्रचारक, संस्कृत सम्मेलनों के संयोजक, संस्कृत प्रेमी भजनोपदेशक तथा संस्कृत प्रचाराभिलाषी सभी सज्जन इस पुस्तक के विपुल प्रचार तथा इसकी सभी रचनाओं के सुमधुर पाठ एवं गान के आयोजन द्वारा इस अनभ्यास-गुरुतर श्रम को सफल बनाने की कृपा करेंगे।

कविजनों से अभ्यर्थना

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, इन कविताओं में संस्कृत के किसी भी वैशिष्ट्य का समीचीन रूप से सर्वाङ्गपूर्ण चित्रण न होने के कारण

मुझे इनसे सन्तोष नहीं है और इसीलिये मैं अभी इस विषय पर उच्च रचनाओं के संकलन एवं प्रकाशन के संकल्प से विरत नहीं हुआ हूँ। अतएव अपने परिचित एवं मित्र कविजनों तथा अपरिचित कवि महानुभावों से भी पुनः विनीत निवेदन करना चाहता हूँ कि वे अपनी रुचि एवं अभिज्ञता के अनुसार संस्कृतभाषा, उसके साहित्य अथवा उसके किसी एक ग्रंथ या ग्रंथकार के सम्बन्ध में एक मनोहर कविता देकर हमारी सहायता करने की कृपा करें। इस प्रकार की २०-२५ उत्तम कविताओं का संग्रह हो जाने पर उन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा तथा लेखकों को पुस्तक की यथोचित कापियाँ भेंट की जायँगी।

एक और बात

यह निश्चित ही है कि हिन्दी की कविताओं से हिन्दी जानने वाली जनता को ही प्रभावित किया जा सकता है अन्य भाषा भाषी जनता को नहीं। अतः यह भी आवश्यक है कि भारत की अन्य भाषाओं में भी वहाँ के कवियों द्वारा इस प्रकार की कविताओं के लिखने का प्रयत्न किया जाय और उन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर तत्तत् प्रदेशों में प्रचुर मात्रा में प्रचारित किया जाय। आशा है, मुझे इस प्रयास में भी अपने अन्य भाषा-भाषी मित्रों से यथेष्ट सहायता प्राप्त होगी। सम्भव है, यह पुस्तक उन्हें कुछ पथ-प्रदर्शन का भी काम दे दे। इसी प्रकार कुछ कवितायें उर्दू तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी देशी-विदेशी समर्थ विद्वानों द्वारा लिखाई जा सकती हैं। यह कार्य यद्यपि अवश्य ही विशेष प्रयत्न-साध्य है फिर भी मुझे आशा है कि कुछ ही समय के भीतर इस प्रकार की अनेक पुस्तकें प्रकाशित होंगी और संस्कृत के गौरवगान से पुनः एक बार भारत का कण-कण मुखरित हो उठेगा।

आशा है ताकत के समस्त अध्यापक एवं छात्र, संस्कृतानुरामी सज्जनगण, कविजन तथा संस्कृत शिक्षा के अधिकारी महानुभाव इस पुस्तक के प्रयोग तथा प्रचार द्वारा इस प्रयत्न को सफल बनाने की कृपा करेंगे।

वसन्तपञ्चमी २०१८

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वाराणसी

विनीत

रचयिता

विषय-सूची

आवश्यक सूचना : ३६ वें पृष्ठ के प्रथम शीर्षक के नीचे वाली पंक्ति को इस प्रकार सुधार कर पढ़ने की कृपा करें —

अलग रखने में संस्कृत से नहीं कुछ बुद्धिमानी है ।

संस्कृतगौरवगानम्

संस्कृत-गौरव-गानम्

⊙

१

भारतीयैकता-साधकं संस्कृतम्
भारतीयत्व-संम्पादकं संस्कृतम्
ज्ञान-पुञ्ज-प्रभा-दर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्द-सन्दोहदं संस्कृतम् ।

२

सर्व-मस्तिष्क-संस्कारकं संस्कृतम्
सर्व-वाणी-परिष्कारकं संस्कृतम्
सत्पथ-प्रेरणा-दायकं संस्कृतम्
सद्गुण-ग्राम-सन्धायकं संस्कृतम् ।

३

विश्वबन्धुत्व-विस्तारकं संस्कृतम्
सर्वभूतैकता-कारकं संस्कृतम्
सर्वतः शान्ति-संस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशील-प्रतिष्ठापकं संस्कृतम् ।

४

त्याग-सन्तोष-सेवा-व्रतं संस्कृतम्
विश्वकल्याण-निष्ठा-युतं संस्कृतम्
ज्ञान-विज्ञान-सम्मेलनं संस्कृतम्
भुक्ति-मुक्ति-द्वयोद्वेलनं संस्कृतम् ।

५

धर्मकामार्थ-मोक्ष-प्रदं संस्कृतम्
ऐहिकामुष्मिकोत्कर्ष-दं संस्कृतम्
कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम् ।

६

सोहमस्मीति-निश्चायकं संस्कृतम्
भेदवादे शितं सायकं संस्कृतम्
"एकमेवाद्वयं" बोधकं संस्कृतम्
सर्वदा सत्यसंशोधकं संस्कृतम् ।

७

शब्द-लालित्य-लीलावनं संस्कृतम्
चारु-माधुर्य-धारागृहं संस्कृतम्
विश्व-चेतश्चमत्कारकं संस्कृतम्
पूर्वजानां यशःस्मारकं संस्कृतम् ।



अमरभारती-आवाहन

★

१

हे अमरभारती आओ,
तुम एक बार आनन्द सुधा फिर इस भू पर बरसाओ।
तुम नाद-ब्रह्म की आदिम व्याकृत वाणी,
तुम मानवकुल की मातृगिरा कल्याणी,
तुम प्रथम उषा की ज्योति विश्व-संस्कृति की,
तुम भुक्ति-मुक्ति-सोपान सुगम संसृति की,
तुम ज्ञान-कर्म की घट-घट में फिर निर्मल ज्योति जलाओ,
हे अमरभारती आओ।

२

तुम भारत के स्वर्णिम अतीत की प्रतिमा,
तुम युग युग गुम्फित-ज्ञान-साधना-सुषमा,
तुम दीपशिखा निर्धूम तिमिरमय पथ की,
तुम रश्मिमालिका मानव-जीवन-रथ की,
तुम क्लान्त जगत को शान्ति-सौख्य का फिर सन्देश सुनाओ
हे अमरभारती आओ।

यह हमारी देवभाषा

★

यह हमारी देवभाषा
लोक-दुर्लभ दिव्य भाषा,
विश्व में अति भव्य भाषा,
यह चिरन्तन भी तरुण तर—
यौवना अति नव्य भाषा
यह हमारी देवभाषा।
यह हमारी धर्म-भाषा,
भक्ति-भूषित कर्म-भाषा,
यह हमारी ज्ञानयुत-
विज्ञान-भाषा नर्म-भाषा,
यह हमारी देवभाषा।
यह हमारी लोक-भाषा,
पूजिता परलोक-भाषा,
यह गहन अज्ञान पथ की—
दिव्यतम आलोक भाषा,
यह हमारी देवभाषा।

यह हमारी यन्त्र भाषा,
पाठ पूजा तन्त्र भाषा,
योग याग समाधि जप-तप—
साधनामय मन्त्र भाषा,
यह हमारी देवभाषा।

यह हमारी वन्द्य भाषा
विश्व-जन-अभिनन्द्य भाषा,
यह मृदुल-कमनीय-कविता—
मधुर-मधु-निःस्यन्द भाषा,
यह हमारी देवभाषा।

श्रान्त-जन-विश्रान्ति भाषा
क्लान्त-आनन-कान्ति भाषा
शोक-सिन्धु-निमग्न-मानव—
धैर्य-संयम-शान्ति भाषा
यह हमारी देवभाषा।

संस्कृत की ही सारी भाषायें सन्तान

★

१

संस्कृत - माता की ही सारी भाषायें सन्तान हैं
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी जीवनदान हैं ।
सिन्धी हिन्दी या आसामी उड़िया या बङ्गाली हो,
गुजराती गुरुमुखी मराठी कश्मीरी गोरखाली हो,
दक्षिण की या तमिल तेलगू कन्नड या मलयाली हो,
अपभ्रंश या प्राकृत भाषा अर्द्धमागधी पाली हो,
संस्कृत से ही मिला सभी को गौरव आज महान् है,
इससे ही यह सारी पातीं अब भी जीवनदान हैं ।

२

संस्कृत से ही ये भाषायें अपना रूप सजाती हैं,
इसके आभरणों से ही ये निज सौन्दर्य बढ़ाती हैं,
अपनी अच्छी बात इसी की वाणी में कह पाती हैं,
इसके ही पङ्खों पर चढ़कर दूर-दूर उड़ जाती हैं,
संस्कृत ही इन भाषाओं की शोभा-शक्ति-निधान हैं,
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी जीवनदान हैं ।

३

आज राष्ट्रभाषा के पद पर आसीना जो हिन्दी है,
संस्कृत से ही उसे मिली यह राजतिलक की बिन्दी है,
इसका ही अब भी बल पाकर वह उन्नति कर सकती है,
तभी देश की आवश्यकतायें पूरी कर सकती है,
संस्कृत से ही आज मिला यह हिन्दी को वरदान है,
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी जीवनदान हैं ।

संस्कृत से ही वाणी-संस्कार

★

१

संस्कृत-शिक्षा से ही होता वाणी का संस्कार
किया इसी ने शब्द-शास्त्र का अद्भुत आविष्कार
स्वर-व्यंजन-वर्णों का वैज्ञानिक यह ज्ञान कराती,
ध्वनियों का भी सूक्ष्म विवेचन यही हमें बतलाती,
यहीं हमें शब्दों के जीवन का इतिहास पढ़ाती,
उनके जन्म-मरण-परिवर्तन का भी भेद बताती,
इसकी कुन्जी से ही खुलता भाषाओं का द्वार
किया इसी ने शब्द-शास्त्र का अद्भुत आविष्कार

२

लैटिन ग्रीक जर्मनी रूसी अंग्रेजी ईरानी,
भाषायें यूरोप-एशिया की जो नई-पुरानी,
इनके भी जीवन विकास में संस्कृत का अवदान,
इसके बिना न सम्भव होना इनका उत्तम ज्ञान,
भाषा-कुल के मूल-ज्ञान का संस्कृत ही आधार
किया इसी ने शब्द-शास्त्र का अद्भुत आविष्कार

संसार को संस्कृत की देन

★

१

संस्कृत ने ही सबसे पहले जग को ऊँचा ज्ञान दिया है,
इसने ही तो "सोहमस्मि" का शुभ सन्देश महान दिया है।
"मा भैः" की शिक्षा दे इसने ही हमको निर्भीक बनाया,
नित्य "अदीनाःस्याम" पढ़ाकर हमें दैन्य को दूर भगाया,
"ईशावास्यमिदं" कह सबमें ईश्वर-साक्षात्कार कराती,
यही हमें नर से नारायण बनने का है पाठ पढ़ाती,
हमें "तत्त्वमसि" कह इसने ही महाशक्ति का दान दिया है,
संस्कृत ने ही सबसे पहले जग को ऊँचा ज्ञान दिया है।

२

"आचारः प्रथमो धर्मः" का इसने ही आदर्श सिखाया,
इसने ही "भूमैव सुखं" का सबसे पहले तत्त्व बताया,
"देश-जाति का रूप-रंग का भेदभाव मिथ्या है सारा—
एक-एक प्राणी वसुधा का बन्धु और परिवार हमारा"
इस उदात्तता का संस्कृत ने ही नर को वरदान दिया है,
संस्कृत ने ही सबसे पहले जग को ऊँचा ज्ञान दिया है।

संस्कृत का लालित्य एवं माधुर्य

संस्कृत भाषा श्रवणमात्र से मुदित हृदय कर देती है,
अपनी मृदु मधुमय वाणी से सबका मन हर लेती है।
इसके कोमल कान्त पदों की जग में छटा निराली है,
इसके ध्वनि की मंजु मधुरिमा अद्भुत वैभवशाली है,
ज्योतिष आयुर्वेद शिल्प में भी वहती रसधार यहाँ,
योग और वेदान्त ग्रन्थ में भी लालित्य अपार यहाँ,
कविता के पीयूष - धार से तो मन ही भर देती है,
संस्कृत भाषा श्रवण मात्र से मुदित हृदय कर देती है।

संस्कृत और भारत की गरिमा

संस्कृत का साहित्य हमारे गौरव का अनमोल खान है,
इससे ही तो हमने जग में गुरु का पद पाया महान है।
कहो, जगत में किसने पाणिनि जैसा वैयाकरण दिया है,
कहाँ पतंजलि जैसे, बोलो भाष्यकार ने जन्म लिया है,
प्रखर बुद्धि आचार्य कहाँ फिर शंकर जैसा अन्य हुआ है,
कौन आर्य चाणक्य सदृश बुध राजनीति-मूर्धन्य हुआ है,
वेद और वेदान्त हमारा स्वाभिमान वह मूर्तिमान है,
आज विश्व-साहित्य-गगन में जिसका यश छाया महान है

संस्कृत एवं राष्ट्रभक्ति की भावना

१

संस्कृत ही है राष्ट्र-भावना सच्ची जागृत करती
भारत के कण-कण में श्रद्धा-स्नेह-भाव है भरती।
भूतल वन-गिरि-शैल-शिला में नद-नदियों के जल में
तरु-पल्लव-फल पुष्प लता में तुलसी - दूर्वादल में,
कीट-पतङ्ग तथा पशु-पक्षी सकल चराचर गण में,
इस आसेतु-हिमाचल भू के खण्ड-खण्ड अणु-अणु में,
यह पवित्र देवत्व भावना सबके मन में भरती,
संस्कृत ही राष्ट्रीय भावना सच्ची जागृत करती।

२

जन्मभूमि को इसने "स्वर्गादपि गरीयसी" माना,
सबसे पहले इसने गाया राष्ट्रभक्ति का गाना,
प्रतिदिन प्रातः मातृभूमि का यह वन्दन सिखलाती,
इसकी रक्षा में मृतजन को सूर्यलोक पहुंचाती,
यहाँ जन्म के हेतु हृदय यह देवों का भी हरती
संस्कृत ही है राष्ट्र-भावना सच्ची जागृत करती।

संस्कृत, एक महान् सम्पत्ति

१

संस्कृत भाषा को मत भूलो भारत की सन्तान,
वड़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान्।

वैज्ञानिक, यह देखो, कैसी इसकी अक्षरमाला,
स्वर-व्यञ्जन का देखो कैसा वर्गीकरण निराला,
वर्ण और उच्चारण का भी कैसा सूक्ष्म विवेक,
जैसा लिखो पढ़ो वैसा ही दोनों बिलकुल एक,

दुनिया की किस भाषा में है ऐसा लिपिविज्ञान,
बड़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान्।

२

इस भाषा का रूप जरा तो, देखें अद्भुत कैसा,
कोमल-परुष, विरल-अविरलका अनुपम मिश्रणजैसा,
कहीं बाल-सारल्य कहीं पर नवयौवन उद्दाम,
कहीं शान्त गम्भीर प्रकृति का चारुचित्र अभिराम,

नाना रूप, विविध, आभूषण, वहु शृङ्गार वितान,
बढ़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान्।

३

इस भाषा का छन्दों से भी कितना प्रिय सम्बन्ध,
नीरस विषयों का भी कैसा सरस पद्यमय बन्ध,
गद्यों में भी पद्यों जैसा श्रवण - सुखद संगीत,
विश्व काव्य साहित्य महोदधि का मधुमय नवनीत,

छन्दों का भी कैसा मोहक स्वर-लय-तान विधान
बड़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान।

४

इसमें श्लेष-विरोधाभासों का अद्भुत विन्यास
यमक-अनुप्रासों का पद-पद पर मधुमय उल्लास,
इसमें अपना रूप सजाती मानों कविता-बाला,
वाणी का मणिमय क्रीडाङ्गण या यह नर्तनशाला,
रचना के अगणित वैचित्र्यों का रमणीय निधान,
बड़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान।

५

रस के ही अनुरूप अक्षरों का सुन्दर संयोजन,
भावों के अनुरूप पदों का आह्लादक आयोजन,
पर्यायों में वस्तु-वस्तु के तत्त्वों का विश्लेष,
एक शब्द में बहुविध अर्थों का अद्भुत संश्लेष,
वसुधा में इसके वैभव का अति दुर्लभ उपमान,
बड़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान।

६

रहीं बहुत-सी जग में पहले भाषायें विख्यात,
एक शब्द भी किन्तु न उनका आज किसी को ज्ञात।
पर यह दिव्य हमारी वाणी यद्यपि अति प्राचीन
अहो आज भी कैसी इसकी जीवन-ज्योति नवीन ?
यही हमारी स्फूर्ति-प्रेरणा का भी मूल-स्थान,
बड़े भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान।

संस्कृत से ही वाणी और हृदय का संस्कार

१

संस्कृत भाषा ही मानव को सचमुच संस्कृत करती
अपने अनुपम संस्कारों से सारा कल्मष हरती।
इसके पढ़ने से ही होता शब्दों का संस्कार,
प्रकृति और प्रत्यय का करती सम्यग् विशद विचार,
अपशब्दों के उच्चारण को इसने माना पाप,
एक वर्ण का भी है दूषित उच्चारण अभिशाप,
कौन अन्य भाषा है ऐसी शुद्ध भावना भरती ?
संस्कृत भाषा ही मानव को सचमुच संस्कृत करती।

२

वाणी की ही भाँति हृदय को भी यह शुद्ध बनाती,
प्रतिदिन दूषित आचरणों से बचना यह सिखलाती,
एक सत्य ही इसके सारे शास्त्रों का है ज्ञेय,
भाव-शुद्धि ही इसकी सारी शिक्षाओं का ध्येय
जैसा इसका नाम काम भी वैसा ही है करती,
अपने अनुपम संस्कारों से सारा कल्मष हरती।

संस्कृत और राष्ट्रीय एकता

१

संस्कृत ही राष्ट्रीय एकता का दृढ़तम आधार एक है,
यही हमारे स्नेह-समागम मधुर मिलन का द्वार एक है।
चाहे हों हम दक्षिणवासी चाहे हों कश्मीर निवासी,
अङ्ग-वङ्ग गुजरात मराठा मालव के या हों आवासी,
एक हमारा धर्म सनातन सकल शास्त्र भी एक हमारे,
गीता वेद पुराण उपनिषद् धर्मग्रन्थ ये एक हमारे,
सन्ध्यावन्दन एक हमारा गायत्री श्रुतिसार एक है,
यों संस्कृत के कारण सारा भारत ही परिवार एक है।

२

प्रादेशिक भाषायें अपने ही प्रदेश का गौरव गातीं,
एक दूसरे से अपने को ही विशेष उत्कृष्ट बतातीं,
पर अखण्ड भारत की आत्मा संस्कृत में प्रतिबिंबित होती,
एक कलशपूजन में पूरे भारत का दर्शन दे देती,
इससे ही भारत की जनता का सञ्चित संस्कार एक है,
संस्कृत ही राष्ट्रीय एकता का दृढ़तम आधार एक है।

३

उत्तर के पाणिनि की दक्षिण में होती है सादर चर्चा,
दक्षिण के शङ्कर-रामानुज की उत्तर में घर-घर अर्चा,
कालिदास पर भारत के जो व्यक्ति-व्यक्ति का स्वाभिमान है
"ललित लवङ्ग-लता" का होता जो मधुमय सर्वत्र गान है,
इस महान अद्वैत दृश्य का संस्कृत ही आधार एक है,
संस्कृत ही राष्ट्रीय एकता का दृढ़तम आधार एक है।

संस्कृत एवं नैतिकता

१

संस्कृत भाषा ही मानव में पावन भाव जगाती,
इसके छाया-स्पर्श मात्र से नैतिकता आ जाती।
धर्मभाव से इसका सारा जीवन ओत-प्रोत,
इसकी स्वर - लहरी से निर्गत भक्ति-भाव का स्रोत,
इसकी शिल्प-कला में अङ्कित मानव का कल्याण,
पंचशील ही इसकी शिक्षाओं के पंच प्राण,
यह मनुष्यता के उच्चासन पर नर को बिठलाती,
संस्कृत भाषा ही मानव में पावन भाव जगाती।

२

कामशास्त्र भी इसका इन्द्रिय-जय ही है सिखलाता,
अर्थशास्त्र भी नहीं पाप से अर्थार्जन बतलाता,
राजनीति में भी इसके हैं धर्मनीति का स्थान,
रण में भी नैतिक नियमों का होता है सम्मान,
महाकष्ट में भी पापों से यह बचना सिखलाती,
संस्कृत भाषा ही मानव में पावन भाव जगाती।

संस्कृत और राष्ट्रीय प्रगति

१

सत्य अहिंसा आदि जगत के जो धारक हैं तत्त्व,
उनको ही सर्वोपरि संस्कृत ने है दिया महत्त्व।
नहीं अनर्गल अर्थ-काम का यह करती सम्मान,
उच्छृङ्खल अभिलाषाओं का नहीं यहाँ पर स्थान।
संस्कृत ही हमको उन्नति का सच्चा राह बताती,
यही प्रगति के तुङ्ग शिखर पर सबको है पहुँचाती।

२

प्रगतिवाद का आज सुनाई देता जो कोलाहल,
इसमें भरा भयङ्कर, समझें, दुर्गति का हालाहल।
एकमात्र अधिभूतवाद ही इस तरु का है मूल,
और युद्ध संघर्ष, वासना मत्सर ही फल-फूल।
इस विनाश से संस्कृत शिक्षा ही है हमें बचाती,
सही प्रगति के पथ पर सबको केवल यही चलाती।



घर-घर संस्कृत का प्रचार हो

१

घर-घर संस्कृत का प्रचार हो ।
सौध-सौध में सदन-सदन में,
मठ-मन्दिर विद्यालय-वन में,
कुटी-कुटी के बाल-बालिका,
नर-नारी के वदन-वदन में,
आज भोज-विक्रम के युग का
आवर्तन फिर एक बार हो । घर-घर०

२

वेदों का उद्घोष मधुर हो,
उपनिषदों का पाठ प्रचुर हो,
गीता रामायण भारत की—
वाणी ही सब ओर मुखर हो,
कालिदास की रसधारा से
पिच्छिल पथ भू का अपार हो । घर-घर०

यह संस्कृत से कैसा विराग

१

यह संस्कृत से कैसा विराग ?
जिसने ही जीवनदान दिया,
शुभ कर्मयोग का ज्ञान दिया,
सबसे ऊँचा सम्मान दिया,
कर दैन्य निराश दूर चूर--
"उत्तिष्ठत" का वरदान दिया,
उस वन्द्य वत्सला माता का—
यह कैसा निर्घृण परित्याग ?

२

इसके विद्यालय श्री - विहीन,
इसके सेवक के मुख मलीन,
दिन प्रतिदिन इसकी दशा दीन,
पर छोड़ इसे तुम अपने को—
कह सकते कैसे ऋषिकुलीन,
अब नहीं समय यह सोने का-
ओ बन्धु, आज भी जाग-जाग।

३

अब इस को आज बचाना है,
उन्नति के पथ पर लाना है,
इसका दुख-दैन्य मिटाना है,
इसकी शिक्षा - संदेशों से—
आगे यह राष्ट्र बढ़ाना है,
कुल में इस मातृ-उपेक्षा का—
है उचित लगाना नहीं दाग।

४

कर बन्द अन्य सब काम-काज,
पूजा का ले साहित्य साज,
सँग में लेकर सारा समाज,
इस मातृ-उपेक्षा के अघ का—
हम कर लें प्रायश्चित्त आज;
है जब तक दग्ध नहीं करती--
इस देवी की अभिशाप-आग ।
यह संस्कृत से कैसा विराग ?

संस्कृत में ही भारत का वैभव अन्तर्हित

संस्कृत में ही है छिपा हुआ भारत का वह वैभव विशाल,
जिस हेतु आज भी जगती में भारत का ऊँचा भव्य भाल ।
इसमें ही वैदिक कर्मयोग, उपनिषदों का वह ब्रह्मवाद,
इसमें ही झंकृत नारदीय वीणा का वह सुमधुर निनाद,
मनु का वह मानव धर्मशास्त्र, रामायण का पावन प्रसंग,
श्री व्यासदेव के ज्ञान-महोदधि का उच्छल शत-शत तरंग,
इस माला में ही ग्रथित सकल भारत का मणि-मुक्ता-प्रवाल,
संस्कृत में ही है छिपा हुआ भारत का वह वैभव विशाल ।

देववाणी से देश का कल्याण

१

देववाणी के उदय से देश का कल्याण होगा,
राष्ट्र का फिर से हमारे दिव्य नवनिर्माण होगा ।
फिर हमारे देश में जब साम का मधुगान होगा,
और गीता का मधुर उपदेश अमृत-पान होगा,
नित्य प्रातः प्रणव का जप-योग सन्ध्याध्यान होगा,
धर्म-नीति-सुभाषितों का प्रचुर पाठ विधान होगा,
देश का तब दुर्विचारों से सुनिश्चित त्राण होगा,
राष्ट्र का फिर से हमारे दिव्य नवनिर्माण होगा ।

२

प्रानिवर्य्य महर्षियों की प्रेरणावाणी पढेंगे —
जब हमारे युवक, निश्चित सौ कदम आगे बढेंगे ।
जब यहाँ वेदान्त के अद्वैत का उद्‌घोष होगा,
देश सब सङ्कीर्णताओं से रहित निर्दोष होगा ।
देश-उन्नति के लिए यह तत्त्व ही बस प्राण होगा,
राष्ट्र का फिर से हमारे दिव्य नवनिर्माण होगा ।

बिना अध्यात्म के विज्ञान लाभकारी नहीं

१

वैज्ञानिक उन्नति से तब तक दूर जगत का रोग न होगा,
संस्कृत के अध्यात्मशास्त्र का जब तक उसमें योग न होगा।
स्पुटनिक आप भले ही छोड़ें चन्द्र-सूर्य तक जावें,
विश्वमंच पर प्रकृति नटी को चाहे नग्न नचावें,
गगन समीर भूमि जल पावक सब कुछ वश कर लेवें,
ईश्वर तक को आप निरर्थक भले सिद्ध कर देवें,
पर इसका सुख-शान्ति लब्धि में तब तक कुछ उपयोग न होगा,
जब तक आध्यात्मिक विकास का इससे शुभ संयोग न होगा।

२

आज मचा जो हुआ चतुर्दिक भीषण हाहाकार,
क्षुद्र स्वार्थ के लिए हो रहा अगणित नर संहार,
देश - देश का जाति - जाति का रंग - रंग का भेद,
आज कर रहा मानवता का निर्मम मूलच्छेद,
राकेटों से इन दोषों की तब तक कुछ भी शान्ति न होगी,
एक बार जब तक भूतल पर फिर आध्यात्मिक क्रान्ति न होगी।

३

उन्नति के उत्तुङ्ग शिखर पर आज बैठ विज्ञान,
धर्म और आध्यात्मिकता का भूल रहा सम्मान,
पर हिरोशिमा से पूछो इसकी वीभत्स कहानी,
नहीं आज भी सूख सका जिसकी आँखों का पानी,
इस विनाश से बचने में तब तक समर्थ संसार न होगा,
धर्म और अध्यात्मयोग का जब तक पूर्ण प्रचार न होगा।

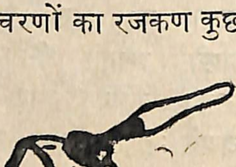
संस्कृत से ही अपनी पहचान

१

संस्कृत पढ़कर ही हम, भाई, अपने को पहचान सकेगें,
इसके द्वारा ही हम सचमुच अपना गौरव जान सकेगें।
कितना है प्राचीन हमारा विश्वविदित इतिहास महान,
कितनी है उत्कृष्ट सभ्यता संस्कृति और कला विज्ञान,
हिमगिरि से भी ऊँचा उज्ज्वल जीवन का कैसा आदर्श,
व्योम-समान विशाल हृदय का वह कैसा अनुपम उत्कर्ष,
संस्कृत की ही पुण्य पंक्तियों से हम यह सब जान सकेगें,
संस्कृत पढ़कर ही हम भाई अपने को पहचान सकेगें।

२

कैसे हुए महान पुरुष हैं यहाँ एक से एक उदार,
ज्ञानी, बली, विजेता, धार्मिक, स्नेह-भक्ति के सिन्धु अपार,
मेधावी, स्वाधीन-विचारक सत्य-पक्षपाती, प्रणवीर,
अतुल साहसी, अध्यवसायी, कष्ट-सहिष्णु महारण धीर,
ऐसे अपने पूज्य - पूर्वजों को हम कैसे जान सकेगें,
जब तक हम संस्कृत के चरणों का रजकण कुछ पा न सकेगें।



भारतीयता और संस्कृत

१

भारतीयता रखनी हो तो संस्कृत का उत्थान कीजिये,
भारतीय संस्कृति रक्षा हित इसका समुचित मान कीजिये।
अंग्रेजों ने यहाँ पहुँच कर अंग्रेजी शिक्षा फैलाई,
उसके ही माध्यम से अपनी राजनीति सभ्यता चलाई,
अपने पूर्वजनों की निन्दा करना ही हमको सिखलाया,
उल्टा-सीधा पाठ पढ़ाकर "अपने-पन" का मान मिटाया,
अब भी तो उस भीषण विष के निर्मूलन पर ध्यान दीजिये,
अब से भी शिक्षा में संस्कृत को भी समुचित स्थान दीजिये।

२

अंग्रेजी भाषा में जो कुछ ज्ञान और विज्ञान निहित है,
उसके संग्रह से भारत का लाभ और उन्नति निश्चित है,
किन्तु हमारी मौलिकता का भी हमको रक्षण करना है,
संस्कृत से ही संस्कृति का रस जीवन के घट में भरना है,
इसे भूलना कभी न अच्छा होगा, इसको मान लीजिये,
इसीलिये शिक्षा में संस्कृत को अब समुचित स्थान दीजिये।

संस्कृत के बिना ज्ञान अपूर्ण

१

दुनिया भर की आप भले ही सब भाषायें जानें
किन्तु बिना संस्कृत के निज को अज्ञानी ही मानें।
हिन्दी या अंग्रेजी, उर्दू, फ्रेन्च, जर्मनी भाषा,
सबमें आप निपुण हों मेरी यही परम अभिलाषा,
पर सबके पहले आवश्यक है संस्कृत का ज्ञान,
इसके बिना अधूरी शिक्षा और सुदुर्लभ मान,
अपनी इस विस्मृत सम्पद को अब से भी पहचानें,
इसके बिना आप अपने को अज्ञानी ही मानें।

२

भारत का विद्वान न जाने वेदों का कुछ सार,
नहीं कण्ठ में जिनके संस्कृत-कविता-मुक्ताहार,
भारतीय दर्शन का जिनको मिला न कुछ आभास,
उनका देश-विदेशों में हो क्यों न भला उपहास ?
यह कलङ्क है बड़ा, आप अब आयें इसे मिटाने,
इससे रहना हीन नहीं है अच्छा, निश्चित मानें।



संस्कृतज्ञान-हीन हिन्दू ?

१

हिन्दू होकर भी संस्कृत का जिसने कुछ भी ज्ञान न पाया,
उसने अपना, अपने कुल का भारत का भी नाम हँसाया।

जिसको अपने पूज्य पूर्वजों ऋषियों तक का ज्ञान नहीं है,
उनके अद्भुत त्याग-तपस्या का जिसको अभिमान नहीं है,
तिल भर भी आभास न पाया जिसने उनके दिव्य ज्ञान का,
दर्शन तक भी किया न जिसने उनकी कृतियों के निधान का,

वह निश्चय निर्लज्ज व्यक्ति है, कुलकलङ्क होकर वह आया
सब कुछ पढ़कर भी संस्कृत के विना व्यर्थ ही जन्म गँवाया।

२

किया मैक्समूलर ने वेदों के पढ़ने में जीवन-दान,
शोपेनहावर ने उपनिषदों से पाया सन्तोष महान,
शाकुन्तल पढ़कर गेटे ने वह आनन्द अलौकिक पाया,
शतशत अन्य विदेशी विद्वानों ने भी है लाभ उठाया,

फिर हिन्दू होकर भी जिसने संस्कृत का कुछ ज्ञान न पाया
उसने अपनी आर्य जाति का ऋषियों का भी नाम हँसाया।



संस्कृत की रक्षा एवं प्रचार के लिये प्रतिज्ञा

१

संस्कृत की सेवा में सबको तन - मन आज लगाना है,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा में जुट जाना है।
यही हमारे पूज्य पूर्वजों की परमप्रिय वाणी है,
यही हमारी भुक्ति-मुक्ति की प्रिय जननी कल्याणी है,
सदियों से इसमें ही संचित सब साहित्य हमारा है,
वही इसीमें भारतीय प्रतिभा की निर्मल धारा है,
इसका विन्दु-विन्दु अति पावन, मस्तक उसे चढ़ाना है,
इसकी रक्षा और वृद्धि का आज विधान बनाना है।

२

कभी दूर देशों मैं भी था इसने पाया मान महान,
धर्म, राज्य, साहित्य, कला में अभिलेखों में भी सम्मान,
श्याम, अनाम, सुमात्रा, कम्बुज, मलय आदि सब देशों में,
जावा, बालि, बोनियो, सिंहल, वर्मा, चीन प्रदेशों में,
आज पुनः उन देशों में भी हमें इसे पहुँचाना है,
संस्कृत की सेवा में सबको तन मन आज लगाना है।

विद्यार्थियों की प्रतिज्ञा

संस्कृत भाषा अमर, हमारी यह हमको प्राणों से प्यारी,
इसको नहीं भुलायेंगे हम, इसका मान बढ़ायेंगे हम।

इसके पढ़ने-लिखने से ही भाषा का भी ज्ञान बढ़ेगा,
पढ़े-लिखे लोगों में इसके पढ़ने से सम्मान बढ़ेगा,
अब स्वतन्त्र भारत में ज्यादा अंग्रेजी का काम न होगा,
संस्कृतवाली हिन्दी में ही अब से सारा काम चलेगा,

संस्कृत पढ़ने-लिखने में अब अपना ध्यान लगायेंगे हम,
अब हिन्दी के साथ-साथ इसका भी ज्ञान बढ़ायेंगे हम।

संस्कृत पढ़ने-लिखने की प्रतिज्ञा

संस्कृत भाषा अमर कीर्ति है यह भारत-वसुधा की,
यही मूल निर्मल-निर्झरिणी कोमल-काव्य-सुधा की,
ज्ञान, भक्ति-निष्काम कर्म का यही त्रिवेणी-संगम,
गौरीशंकर शिखर हमारी प्रतिभा का यह जंगम,

इसके चिर-अर्चित चरणों में फिर हम शीश झुकावें,
आज प्रतिज्ञा लेकर हम सब संस्कृत पढें पढ़ावें।

कन्याओं को संस्कृत शिक्षा

१

कन्याओं को भी अब हम सब संस्कृत खूब पढ़ावें,
भारतीय संस्कृति की घर-घर कीर्तिध्वजा फहरावें।
गार्गी-मैत्रेयी-आत्रेयी-सम विदुषी महिलायें,
हुईं यहीं जिनकी चर्चा से मुखरित सभी दिशायें,
शास्त्रनिपुण, संगीतविशारद, कला-कुशल, कवयित्री—
वनिताओं से कभी रही यह भूषित भव्य धरित्री,
उसी दृश्य को फिर हम अपने घर-घर में फैलावें,
कन्याओं को संस्कृत की हम विदुषी पुनः बनावें।

२

किसी समय जल भरनेवाली भी दासी-वनितायें,
रचती थीं इस अमरभारती में सुललित कवितायें।
कभी यहीं पर मालिन रमणी कविता मधुर सुनाती,
भोजराज की कविसंसद् में महिलायें भी आतीं।
आज हमारी कन्यायें भी कवयित्री बन जावें,
संस्कृत का हम इतना उत्तम उनको ज्ञान करावें।

३

अंग्रेजी शिक्षा जो पातीं स्कूलों में कन्यायें,
उनकी चर्चाओं से दुःखी सभी पिता-मातायें।
आज दृश्य जो दीख रहा है घर-घर हृदय-विदारण,
संस्कृत-शिक्षा से ही उसका हो सकता है वारण,
कन्या संस्कृत विद्यालय भी अब हम लोग चलावें,
कम से कम प्रथमा की शिक्षा उन्हें अवश्य दिलावें।

संस्कृत से डर क्यों ?

१

संस्कृत को कुछ कठिन समझकर जो पढ़ने से डरते हैं,
वे फिर और कौन-सा भारी कठिन काम कर सकते हैं ?
फिर संस्कृत तो बहुत सरल है इसे कठिन बतलाना,
अपनी नासमझी है भारी या यह एक बहाना।

२

जब यूरोप-निवासी संस्कृत के पण्डित हो जाते,
संस्कृत में पढ़ते-लिखते हैं, कविता भी कर पाते,
काबुल, कन्धाहार, अरब को जब संस्कृत आ जाती,
रूस कनाडा को जब संस्कृत कभी नहीं डेरवाती—

३

तो भारतवासी होकर फिर आप भला क्यों डरते ?
क्यों कठिनाई का कलंक हैं इसके शिर पर मढ़ते ?
नहीं कठिन यह, बहुत सरल है, बहुत शीघ्र है आती,
प्रेमी जन को देख दौड़कर आ जाती मुसकाती।

४

संस्कृत के जब शब्द हजारों प्रतिदिन बोले जाते,
अव्यय, संज्ञा, धातु, विशेषण सभी समझ में आते।
तो भारतवासी को संस्कृत आने में क्या भय है,
बस-दो-तीन महीनों का ही काफी बहुत समय है।

संस्कृत शिक्षा, क्या बेकार है ?

१

संस्कृत को बेकार समझना बेसमझी है सबसे भारी,
यह तो प्राणों से भी बढ़कर दिव्य जीवनी-शक्ति हमारी।
यद्यपि हुई बहुत यह वृद्धा फिर भी नवयुवती माता सी,
अब भी करती स्तन्यपान से लालन-पालन पुष्टि हमारी।

२

हमें नये शब्दों की भी है जब जब आवश्यकता पड़ती,
लक्ष-लक्ष शब्दों को देकर यह साहाय्य हमारा करती।
जब-जब शब्द विदेशी हमको अपनेपन से दूर भगाते,
शब्द इसी के आकर हममें अपने शुभ संस्कार जगाते।

३

भारतीय सब भाषाओं को यदि हम शीघ्र सीखना चाहें,
यह साहाय्य हमारा करने स्वयं दौड़ फैलाती बाहें।
भारत के इतिहास सभ्यता संस्कृति की जब चर्चा आती,
यही हमें उनके स्वरूप का परिचय भी वास्तव बतलाती।

४

रूप-रंग भाषा-भूषा के नानाविध भेदों से सारे,
जब प्रतीत होने लगते हैं छिन्न-भिन्न से प्रान्त हमारे।
तब अपनी मधुमय वाणी से यह सबमें बन्धुत्व जगाती,
यही एकता के आसन पर सबको है लाकर बिठलाती।

५

जब गाण्डीव हमारे हाथों से कुछ कभी खिसक जाता है,
हृदय-गगन में जब विषाद का बादल कुछ घिर सा आता है।
पांचजन्य लेकर यह पौरुष का पावन सन्देश सुनाती,
कर्म-योग का पाठ पढ़ाकर हमें युद्ध में विजय दिलाती।

६

जब नर को आकुल कर देतीं प्रिय-वियोग की करुण-कथायें,
और शोक नैराश्य-पराभव-असफलता की विषम व्यथायें।
तब अमोघ मधुमय उपदेशों से यह क्लेश सकल हर लेती,
शत-शत सूक्ति-सुधा-सिंचन से म्लान हृदय हर्षित कर देती।

७

आज जगत में सत्य-अहिंसा की जो दी जाती है शिक्षा,
वह भी इसके ही निधि से हैं मिली हुई मानव को भिक्षा।
विश्व-बन्धुता सर्वोदय का भी जो कुछ फैला प्रकाश है,
उपनिषदों के ब्रह्मवाद की कणिका का केवल विलास है।

८

भूत और अध्यात्म अलग जब एक दूसरे से हो जाते,
घोर मोहवश आपस में ही जब वे हैं बैरी बन जाते।
यही बीच में पड़कर दोनों का सारा दुर्भाव मिटाती,
एक दूसरे का पूरक बन दोनों को रहना सिखलाती।

९

अर्थ काम की जब असीम लिप्सा-वश होकर भीषण दानव—
आत्मनाश के गहन गर्त में गिरने लग जाता है मानव,
यही धर्म के अवलम्बन से जीवन की रक्षा है करती,
जिनके कारण ही अब तक है टिकी हुई अम्बर में धरती।

१०

कथा सत्यनारायण की है घर-घर में यह नित्य सुनाती,
शान्तिपाठ के मन्त्रों से यह विश्वशान्ति के भाव जगाती।
सदा स्वस्तिवाचन से करती ऋद्धि-सिद्धि कल्याण हमारा,
नित्य पर्व-उत्सव से रखती यह आनन्दित जीवन सारा।

११

स्वामी दयानन्द को इसने ही जागृति का पाठ पढ़ाया,
तिलक और गांधी में इसकी गीता ने ही जोश बढ़ाया।
आज विनोवा भी इसकी ही शिक्षा के सन्देश सुनाते—
और जवाहर-जयप्रकाश भी इसकी शिक्षा से बल पाते।

१२

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यह प्रकाश अद्भुत फैलाती,
एक-एक वाणी में हमको यह अजेय साहस दे जाती।
ऐसी उपकारक भाषा को भी जो है बेकार बताता,
नहीं देश के हित से उसका और बुद्धि से कोई नाता।

संस्कृत अमरभाषा अथवा मृतभाषा ?

संस्कृत को मृतभाषा कहना अपने ही मर जाना है,
अपने ही मुँह से अपने को महामूर्ख बतलाना है।
उत्तर से दक्षिण तक अब भी होता है जिसका व्यवहार,
जिसमें ही जप-याग हमारा पूजा - पाठ और संस्कार,
जिसमें ही हम लेते अब भी शब्दों का ऐच्छिक आदान,
जिसके उपदेशों से मिलती अब भी जीवन-शक्ति महान,
जो उत्साह अतुल साहस का अमर अनन्त खजाना है,
ऐसी भाषा को मृत कहना अपना मरण बताना है,



संस्कृतसाहित्य की एक झाँकी

१

आओ भाई संस्कृत का कुछ परिचय तुम्हें करावें,
इसके साहित्यिक वैभव की झाँकी एक दिखावें।
इसके पावन पद-पद्मों पर, आओ शीश झुकाओ,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा का, घर जाओ।

२

यह दुनिया की भाषाओं में सबसे पहली भाषा,
सबसे शिष्ट परिष्कृत कोमल यह इसकी परिभाषा।
भारत के सब ज्ञान-कला का अक्षय यही खजाना,
इसका काम सभी लोगों को सुन्दर सुखी बनाना।

३

ये हैं चारो वेद जगत के आदिम ग्रन्थ महान,
जिनसे मिला विश्व को पहले ज्ञान-ज्योति का दान।
ब्राह्मण ग्रन्थ तथा आरण्यक वेदों के परिशिष्ट,
और चार उपवेद अङ्ग छ वैदिक अङ्ग विशिष्ट।

४

इधर वेद-साहित्य शिरोमणि ये उपनिषद महान,
सत्य-ज्ञान-आनन्द-शान्तिमय जीवन के सोपान।
गौतम–कपिल-कणाद–पतञ्जलि–जैमिनि-व्यास-विनिर्मित,
ये छ दर्शन-शास्त्र हमारे ज्ञानसमुद्र असीमित।

५

यहाँ आदि कवि वाल्मीकि की अमर काव्यमय धारा,
जिसका दिव्य सुधा-रस पीकर जीवित देश हमारा।
व्यास-महामुनि की प्रतिभा का इधर दिव्य वरदान,
पञ्चम वेद महाभारत है भारत का अभिमान।

६

ये हैं पूज्य पुराण अठारह उपपुराण समवेत,
धर्म-नीति - इतिहास-सुभाषित - नानाविषय - समेत।
याज्ञवल्क्य - मनु-आदि रचित ये धर्मग्रन्थ अनेक,
सदाचार - वर्णाश्रम-विधि का जिनमें विशद विवेक।

७

गणित-फलित-सिद्धान्त-सहित यह ज्योतिष शास्त्र अपार,
यह अष्टाङ्ग चिकित्सा-तरु का शाखा-शत-विस्तार।
शिल्प-कला-सङ्गीत-नाट्य के यहाँ ग्रन्थ ये आकर,
कामशास्त्र के ग्रन्थ इधर ये स्नेह-सौख्य-रत्नाकर।

८

यहाँ काव्य-नाटक चम्पू का भव्य विपुल विस्तार,
विविध छन्द सज्जा शैली का यह अनुपम सम्भार।
सरस मधुर कोमल कविता का यह सुन्दर उद्यान,
जहाँ दूर से मुग्ध मधुप आ करते हैं मधुपान।

९

इधर चित्र-काव्यों की देखें चारु चमत्कृति-शाली—
अखिल विश्व में अपनी जैसी रचना एक निराली।
एकाक्षर द्व्यक्षर बह्वर्थक विपर्यस्त कवितायें,
इस उपवन की रंग - विरंगी सभी कुसुम-कलिकायें।

१०

नीति-सुभाषित ग्रन्थों की यह अनुपम मणिमय माला,
एक-एक दाने से होता जिनके परम उजाला।
यहाँ देखिये लोक कथाओं का साहित्य अपार,
गद्य-पद्यमय परम मनोहर सत्-शिक्षा आगार।

११

यहाँ देखिये स्तुतिग्रन्थों का एक अलग संसार,
जहाँ भक्ति-करुणा-वत्सलता की वहती रसधार।
यहाँ ललित-गीतों का, देखें, मोहक स्वर-सञ्चार,
एक एक पद में वाणी का नव नूपुर-झङ्कार।

१२

वैदिक गृह्य कर्मकाण्डों का यह संघात महान,
पूजा यज्ञ तीर्थ व्रत संस्कारों का विविध विधान।
यह काश्मीरिक शैव तन्त्र-ग्रन्थों का एक निकाय,
मन्त्र-साधना के ग्रन्थों का यह अद्‌भुत समुदाय।

१३

यह, देखो, हैं कालिदास की अद्‌भुत कृतियाँ सारी,
एक एक कविता है इनकी निधि अनमोल हमारी।
यहाँ देखिये पाणिनि मुनि की अद्‌भुत अष्टाध्यायी,
जिसने जग में भारत-भू की अमर कीर्ति फैलायी।

१४

गुरु वशिष्ठ का विस्मयकारी यह कर्तृत्व महान,
ग्रन्थ योगवाशिष्ठ देखिये ज्ञान-समुद्र-समान।
यहाँ आर्य चाणक्य महामति की प्रतिभा का वैभव,
ग्रन्थ देखिये अर्थशास्त्र यह भारत-भू का गौरव।

१५

यह वाराह मिहिर की देखें, बृहत्संहिता कैसी,
रचना नाना-विषय-समन्वित अद्भुत सागर जैसी।
व्यासदास क्षेमेन्द्र महाकवि का यह ग्रन्थ-वितान,
सकल लोक-चातुर्य-कला का अनुपम एक निधान।

१६

बौद्ध-जैन-संस्कृत-ग्रन्थों का यह अद्भुत भण्डार,
इधर देखिये, शत-शत अनुपम रत्नों का आगार।
वैदिक-बौद्ध-जैन-कृतियों का संस्कृत पावन सङ्गम,
जिसकी धारा से भारत का प्लावित स्थावर-जङ्गम।

१७

भाषा या साहित्य नहीं यह वाणी का शृङ्गार,
यह स्वर्गीय सुधा का शीतल सुरभित रसमय धार।
भारत की साहित्य-साधना-संस्कृति का यह प्राण,
इसकी रक्षा में ही निश्चित भारत का कल्याण।
इसका शुभ दर्शन कर अपना जीवन धन्य बनाओ,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा का, घर जाओ।

एक चाह

१

यह संस्कृत हमारी परम पूज्य भाषा
इसी का सदा अभ्युदय चाहता हूँ।
इसी का मधुर गान सर्वत्र गूँजे,
वही देखना फिर समय चाहता हूँ।

२

इसीं में अखिल ज्ञान संचित हमारा,
इसीने है जीवन सवाँरा, सुधारा।
इसीके चरण - अर्चना - वन्दना में,
निरन्तर लगाना हृदय चाहता हूँ।

३

इसी को पढ़ूँ मैं, इसीमें लिखू मैं,
इसी की सदा मञ्जु-वाणी सुनूँ मैं।
इसी के उदय में, इसी के प्रणय में,
मैं जीवन का अपने विलय चाहता हूँ।

बच्चों को एक सलाह

१

बच्चों, संस्कृत पढ़ो प्रेम से इसको नहीं भुलाओ,
यदि सुयोग्य बनना चाहो तो इसका ज्ञान बढ़ाओ।

संस्कृत पढ़ने से ही होगा शुद्ध साफ उच्चारण,
भाषा का भी ज्ञान बढ़ेगा संस्कृत के ही कारण,
तभी लेख लिखने में भी हो तुम आगे बढ़ सकते,
संस्कृत पढ़ने से तुम अच्छी कविता भी कर सकते,

इसी हेतु संस्कृत पढ़ने में अब से भी लग जाओ,
साथ साथ हिन्दी-इङ्ग्लिश के इसमें भी डट जाओ।

२

संस्कृत पढ़ने में जो बच्चे करते आज ढिलाई,
आगे चलकर किन्तु न होगी, उनकी कभी भलाई।
मौका आने पर अपने को जब अयोग्य पायेंगे,
भरी सभा में नत-मस्तक हो निश्चित पछतायेंगे,

इसीलिये अब से भी सँभलो, सावधान हो जाओ,
बच्चों, संस्कृत पढ़ो प्रेम से इसको नहीं भुलाओ।

मूढ़ता की निशानी

अलग रहने में संस्कृत से नहीं कुछ बुद्धिमानी है,
हमारी मूढ़ता की यह बड़ी सबसे निशानी है।
हमारे पूर्वजों की जो युगों की साधना भारी,
हमारे देश की जो है अलौकिक सम्पदा सारी,
जो अब भी राष्ट्र की है एकता का मुख्य अवलम्बन
हमारे धर्म - संस्कृति की सुरक्षा का जो है साधन,
उसी को छोड़ने में क्या हमारी बुद्धिमानी है,
हमारी मूढ़ता की यह बड़ी सबसे निशानी है।

संस्कृतशिक्षा की उपेक्षा का फल

१

आज भ्रष्टाचार जो सर्वत्र बढ़ता जा रहा है,
नित्य ही नैतिक गुणों का ह्रास होता जा रहा है,
बढ़ रही नर-नारियों में जो विषम स्वच्छन्दता है,
शील शिष्टाचार संयम का नहीं कुछ भी पता है,
विश्ववन्द्या भी हुई जो दूषिता भारतमही है,
लाभ संस्कृत की उपेक्षा से मिला केवल यही है।

२

देववाणी मानवों में सत्य ही देवत्व लाती,
सर्वदा शुभ आचरण की भावना मन में जगाती,
देशका इतिहास ही इस सत्यता का साक्ष्य देता,
था कभी यह देश ही तो विश्व का अध्यात्म नेता,
किन्तु चारित्रिक पतन की आज जो सीमा नहीं है,
लाभ संस्कृत की उपेक्षा से मिला केवल यही है।

भारतमाता का प्रिय सन्तान

संस्कृत का कुछ ज्ञान नहीं है,
इसका कुछ भी ध्यान नहीं है,

तो वह फिर भारतमाता का प्रेमपात्र सन्तान नहीं है।

संस्कृत ने ही तो भारत को भूतल में विख्यात किया है,
इसने ही तो भारतीयता को वह दीर्घायुष्य दिया है,
इसका ही साहित्यसुधा पी अब तक जीवित देश हमारा,
यह संस्कृत ही भारत की संस्कृति का केवल एक सहारा।

इसका यदि अभिमान नहीं है,
रक्षा का कुछ ध्यान नहीं है,

तो वह फिर भारतमाता का प्रेमपात्र सन्तान नहीं है।



बच्चों को संस्कृत-शिक्षा

१

अगर आप हैं चाहते बालकों को,
विनय-शील-सम्पन्न शिक्षित बनाना।
तो बचपन से उनको सरल-रीति से है,
उचित नित्य संस्कृत पढ़ाना-लिखाना।

२

ये बच्चे जो बचपन में संस्कृत पढेंगे,
चरणवन्दना गुरुजनों की करेंगे,
सदा शिष्ट वातावरण में रहेंगे,
तो निश्चित विनयशीलशाली बनेंगे।

३

अगर देश में शिष्टता - सभ्यता का
वही चाहते पुण्यधारा वहाना—
तो बचपन से ही चाहिये बाल - बच्चों—
को संस्कृत व संस्कृति से परिचित कराना।

संस्कृत बिना शिक्षा अधूरी

१

भारतीय जनता की शिक्षा संस्कृत बिना अधूरी है,
इसीलिए संस्कृत की शिक्षा सबके लिए जरूरी है।

हिन्दू हों या जैन बौद्ध हों सिक्ख पारसी भाई हों,
ब्राह्मण हों या हरिजन हों या मुसलमान ईसाई हों,
आस्तिक हों या नास्तिक हों पर भारतभूमि निवासी हैं,
भारत के निर्व्याज हितैषी निष्ठायुत विश्वासी हैं,

तो संस्कृत-संस्कृत से परिचय उनका बहुत जरूरी है,
भारतीय जनता की शिक्षा संस्कृति बिना अधूरी है।

२

अगर देश में रहकर इसका हित साधन भी करना है,
राजकीय सेवाओं में भी उच्च पदों पर बढ़ना है,
तो हिन्दी की उच्च योग्यता पर भी देना होगा ध्यान,
पर संस्कृत के बिना न हो सकता हिन्दी का उत्तम ज्ञान,

रोटी के भी लिए आज संस्कृत का ज्ञान जरूरी है,
इसीलिए जनता की शिक्षा संस्कृत बिना अधूरी है।

भारत और अंग्रेजी-शिक्षा

१

अंग्रेजी से ही हो सकता भारत का उत्त्थान,
पश्चिम की संस्कृति से ही है संभव जन-कल्याण।
यह विचार है महामूढ़ता महा अन्ध-विश्वास,
यथाशीघ्र ही हमें चाहिए करना इसका नाश।

२

अंग्रेजी ही अखिल विश्व में उन्नत भाषा एक,
यह नितान्त है भ्रान्त धारणा और महा अविवेक।
रूस चीन जापान आदि हैं ऐसे देश महान,
जहाँ नहीं अंग्रेजी का है कोई भी सम्मान।

३

हिन्दी संस्कृत और हमारी प्रादेशिक भाषायें—
यही देश की कर सकती हैं पूरी सब आशायें।
इनकी ही उन्नति में हम सब सारी शक्ति लगावें,
अंग्रेजी से भी बढ़कर हम इन्हें समर्थ बनावें।

४

अंग्रेजी के कभी दास्य से मुक्त हो गया देश,
अंग्रेजी की किन्तु दासता अब भी है अवशेष।
हिन्दी-संस्कृत की उन्नति में यही बड़ी है बाधक,
सब मिल दूर भगावें इसको भारत के हितसाधक।

बच्चों की प्रतिज्ञा

१

संस्कृत भाषा बहुत पुरानी,
इसकी लम्बी बड़ी कहानी,
यह सब भाषाओं की नानी,
फिर भी इसकी नई जवानी।

२

कथा - कहानी खूब सुनाती,
बच्चों को है खूब हँसाती,
मीठे - मीठे गाने गाकर,
सबके मन को है बहलाती।

३

बड़ी रसीली इसकी बानी,
सुनते ही खुश होते प्रानी,
विद्वानों की यही निशानी,
क्या जानें मूरख अज्ञानी।

४

संस्कृत में ही वेद हमारे,
शास्त्र पुराण इसी में सारे,
इसमें ही गीता का ज्ञान,
यह सब विद्याओं की खान।

५

अंग्रेजी को ज्ञान सिखाया,
अरबों को गिन्ती बतलाया,
यही पुरानी भाषा सच्ची,
और सभी भाषायें बच्ची।

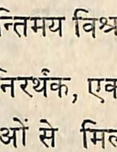
६

आओ, संस्कृत पढ़ें पढ़ायें,
इसका अच्छा ज्ञान बढ़ायें।
इसमें ही कल्याण हमारा,
इसे बचाना धर्म हमारा।



संस्कृत, एक दैवी उपहार

देवभाषा, विश्ववाणी का सुभग शृङ्गार है यह,
शारदा की मञ्जुवीणा का मधुर झंकार है यह।
देखकर जिसको विदेशी भी चमत्कृत-चित्त होते,
चारु-चित्रण-चातुरी का चित्रमय संसार है यह।
एक दिन भी देश का जिसके विना जीवन असम्भव,
वह हमारे धर्म-संस्कृति का परम आधार है यह।
है नहीं जिसकी विपुलता की कहीं कोई इयत्ता,
रत्न-राशि-मरीचि-माला-पुञ्ज पारावार है यह।
तप्त, पीड़ित, मूर्च्छनामय, शोकहत मानव-हृदय का,
स्निग्ध, शीतल, शान्तिमय विश्राम का आगार है यह।
या, अधिक कहना निरर्थक, एक ही यह बात सच्ची,
मानवों को देवताओं से मिला उपहार है यह।



संस्कृत-विद्यालयों का महत्त्व

ये संस्कृत के विद्यालय।
करते शास्त्रों की रक्षा,
देते चरित्र की शिक्षा,
इनसे ही सबको मिलती,
शुचि शील विनय की दीक्षा,
ये पुण्यभूमि देवालय।
इन नग्न--भग्न भवनों में,
इन जीर्ण—शीर्ण सदनों में,
भारत-संस्कृति की आत्मा-
वसती इन पुण्य वनों में,
ये त्याग-तपो-गरिमालय।
ये पुण्यस्थल हैं सारे,
अति पावन तीर्थ हमारे,
इनकी रक्षा में रक्षित,
सारस्वत कोष हमारे,
प्रतिभा के तुङ्ग हिमालय।

कुछ आवश्यक निवेदन

अंग्रेजी के विद्वानों से

◉

१

अंग्रेजी भाषा के विश्रुत माननीय विद्वान ?
भारत की शिक्षा-उन्नति के आशा-केन्द्र महान ?
आज आप भी दें संस्कृत की सेवा में सहयोग,
इसकी रक्षा और वृद्धि के लिए करे उद्योग।

२

संस्कृत के उत्त्थान-पतन की चिन्ता से निर्मुक्त—
रहना होगा विद्वानों के लिए नहीं अब युक्त।
केवल अंग्रेजी-भाषा को ही सर्वस्व न मानें
अपनी भी साहित्य-सम्पदा को कृपया पहचानें।

३

मत समझें इसकी चर्चा में लाघव की आशङ्का,
इसके पढ़ने-लिखने में भी नहीं हानि की शङ्का,
इसकी चर्चा को भी अब से अपना विषय बनावें,
इसकी उन्नति-हित भी थोड़ा अपना समय लगावें।

४

स्वयं आप भी करें यथावत् अजित इसका ज्ञान,
निज पुत्रों की शिक्षा में भी दें कुछ इसको स्थान।
विद्यालय में भी अब इसका करें उचित सत्कार,
बातचीत में भी हो थोड़ा इसका भी व्यवहार।

५

संस्कृत के विद्वान करेंगे संस्कृत का सब काम—
ऐसा सोच न होगा इससे लेना उचित विराम।
स्वयं आपके ऊपर भी है ऋषियों का ऋण-भार
संस्कृत के द्वारा ही होता जिससे है उद्धार।

६

शेक्सपियर शेली मिल्टन की रचनाओं के स्वाद—
आप खूब लें, इसमें हमको कोई नहीं विवाद।
पर संस्कृत की रचनाओं का बिलकुल ही अज्ञान,
नहीं आपको शोभा देता, यह भी सत्य महान।

नेताओं से

१

सभी देश के नेताओं से सविनय यही निवेदन,
मन्त्री, उपमन्त्री, एम० एल० ए०, एम्० पी० से आवेदन।
अब केवल पर्याप्त नहीं है संस्कृत का गुणगान,
इसकी रक्षा हेतु दीजिये अब कुछ सचमुच ध्यान।

२

भारतीय संस्कृति की रक्षा संस्कृत बिना न होगी,
संस्कृतशिक्षा बिना न उन्नति नैतिकता की होगी।
यह रहस्य है देशोन्नति का इसे कदापि न भूलें,
छोड़ मूल-अवलम्बन शाखा-पत्तों पर मत भूलें।

३

पहले संस्कृत आप स्वयं भी संस्कृत से हो जावें,
फिर इसके रक्षा-आन्दोलन में कुछ हाथ बटावें।
राज्यों से भरपूर दिलावें संस्कृत-हित अनुदान,
ऐसा काम करें जिससे हो संस्कृत का उत्थान।

भारत के शिक्षा-विभाग से

१

भारत के शिक्षाविभाग में संस्कृत का है जैसा स्थान,
भारत की ही पूज्य भारती का वह है क्या समुचित मान ?
राज्यकोश में क्या संस्कृत का अब कुछ अंश नहीं अवशेष,
क्या इसमें कुछ धन देने से निर्धन हो जायेगा देश ?

२

संस्कृत के विद्वान नहीं है क्या कुछ खाते पीते,
क्या उनके परिवार नहीं हैं ? कैसे हैं वे जीते।
कभी किसी मन्त्री ने आकर देखा है उनका संसार ?
शीर्ण सदन, अतिसीमित साधन, चिन्ताम्लानवदन परिवार?

३

उनका तो बस दोष यही कि दुःख शान्ति से सहते हैं,
अहोरात्र पर इस भारत की निधि की रक्षा करते हैं।
ऐसा कौन राष्ट्र का सेवक सच्चा होगा वीर महान,
जिनके अद्‌भुत त्याग-तपस्या का करते वैदेशिक गान।

४

उनकी ही दयनीय दशा यह क्या है गौरव की कुछ बात,
उनकी सेवा का प्रतिफल ही है क्या उन पर यह आघात ?
अरे आज भी तो कुछ उनके साथ चाहिये करना न्याय,
इस मानवता के युग में भी ऐसा यह भीषण अन्याय ?

५

मत उनको अब आप दीजिये त्याग-तुष्टि की शिक्षा,
दया - दान की भी अब वे हैं नहीं माँगते भिक्षा।
किन्तु राष्ट्र की सेवा में है यदि उनका भीं कुछ अवदान,
तो उनके जीवन का भी तो करे राष्ट्र समुचित सम्मान।

ब्राह्मणों से

१

ब्राह्मण भी संस्कृत छोड़ेंगे, नहीं कभी थी आशा,
किन्तु देश को हुई आपसे भीषण आज निराशा।
अरे, आपने भी संस्कृत की शिक्षा से मुँह मोड़ा,
वह सम्बन्ध युगों का कैसे इतनी जल्दी तोड़ा ?

२

अंग्रेजी-शिक्षा का होगा नहीं उचित अवरोध,
किन्तु आपको आवश्यक है संस्कृत का भी बोध।
ब्राह्मण को भी संस्कृत का हो नहीं यथावत् ज्ञान,
इससे बढ़कर और भला क्या होगा दोष महान ?

३

ऋषि-मुनियों ने जिस भाषा की भागीरथी बहाई,
जिस निधि की रक्षा में अपनी सारी आयु बिताई।
उनके कुल की ही यह देखें कैसी करुण-कहानी,
जहाँ सिन्धु था आज वहाँ पर नहीं विन्दु भर पानी ?

४

कभी आपके श्रीमुख में था श्रुतियों का आवास,
किन्तु आज सुर्ती-गाँजा का दुर्गन्धित उच्छ्वास।
बैठ कुशासन पर, कर में ले, दर्भों का समुदाय—
कहाँ गया वह नियम उषा में करने का स्वाध्याय ?

५

एक बार भी तो दुहरा दें अब भी वह इतिहास,
फिर से इस उजड़े मधुवन में लहराये मधुमास।
कण्ठ-कण्ठ से सामगान का तान मधुर फिर फूटे,
अब से ऋषिकुल में सुरवाणी का मृदु तार न टूटे।

पद्यमय आदर्श वाक्य

संस्कृत की सभाओं एवं शिक्षासंस्थाओं में पोस्टर के रूप में लगाने योग्य तथा संस्कृत-सभाओं की शोभायात्रा में उद्घोष-वाक्य के रूप में कहने योग्य दो-दो पंक्तियों के कुछ छोटे-छोटे पद्य —

संस्कृत–गौरव–गानम्
देश–जाति–उत्थानम्

×

देव-वाणी ही हमारे देश का सम्मान है,
देव-वाणी ही हमारे राष्ट्र का अभिमान है।

×

संस्कृत भाषा वह गंगा की पावन निर्मल धारा,
जिसके स्पर्शमात्र से होता जीवन धन्य हमारा।

×

संस्कृत पढ़िये। आगे बढ़िये।

×

संस्कृत भाषा का अभ्यास।
करता बौद्धिक–शक्ति–विकास।

×

जब घर-घर संस्कृत-प्रचार हो।
तब सबका उत्तम विचार हो।

×

भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रभाषा है संस्कृत।
भारतीय एकत्व-साधिका आशा संस्कृत।

×

भारतीय संस्कृति का संस्कृत मेरुदण्ड है।
भारतीयता की रक्षा का गढ़ प्रचण्ड है।

×

संस्कृत है सब से आसान।
दो दिन में बस इसका ज्ञान।

×

सुरभारती का ज्ञान ही सबसे बड़ा दौर्भाग्य है।
सुरभारती-अज्ञान ही सबसे बड़ा सौभाग्य है।

×

संस्कृत हमारी भारती,
इसकी उतारें आरती।

×

जब तक ऋषिवाणी का फिर से घर-घर में संचार न होगा।
तब तक भारत का निश्चित ही ऋषिऋण से उद्धार न होगा।

×

संस्कृत रक्षा। संस्कृति रक्षा।

×

संस्कृत भाषा पठनम् । देश जाति संगठनम् ।

×

संस्कृत भाषा अति कठोर है।
यह कहना अज्ञान घोर है।

×

अब भी तो संस्कृत शिक्षा पर ध्यान दीजिये।
इसकी रक्षाहेतु आप कुछ काम कीजिये।

×

जिनको भारत और यहाँ की संस्कृत का है कुछ भी मान।
उनको संस्कृत की रक्षा पर देना है आवश्यक ध्यान।

×

हिन्दी के विद्वान हमारे जब संस्कृति के ज्ञाता होंगे,
तभी वस्तुतः वे हिन्दी के भी सौभाग्य-विधाता होंगे।

×

भारतीय सब भाषाओं का तब तक ज्ञान अधूरा होगा,
पाठकगण को संकृत का भी जब तक ज्ञान न पूरा होगा।

×

संस्कृत की उन्नति में निश्चित भारत का उत्कर्ष,
संस्कृत की अवनति में निश्चित भारत का अपकर्ष।

×

मातायें, बहनें, कन्यायें भी अब संस्कृत पढ़ें प्रेम से,
कम से कम गीता का भी तो पाठ करें कुछ नित्य नेम से।

×

जीवन के अन्तिम क्षण में भी तो संस्कृत कुछ आप जान ले।

×

बिना संस्कृत पढ़े कोई नहीं विद्वान हो सकता।
बिना इसके कहीं पर भी नहीं सम्मान हो सकता।

×

संस्कृत ग्रन्थों में जो अङ्कित जीवन के आदर्श,
उनसे ही निश्चित हो सकता मानव का उत्कर्ष।

×

जिसने किया न अच्छा अर्जित संस्कृत का है ज्ञान,
वह अपने को कह सकता क्या भाषा का विद्वान?
